eISSN:2581-4885
DEV SANSKRITI
VISHWAVIDYALAYA
PUBLICATION

RESEARCH ARTICLE

वेदों में अश्वमेध यज्ञ

लालिमा बाथम [1*], स्वर्णकला सिंह [2]

[1] शोधार्थी, योग विज्ञान और मानव चेतना विभाग देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुंज, हरिद्वार, भारत
[2] सहायक प्राध्यापक, योग विज्ञान और मानव चेतना विभाग देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुंज, हरिद्वार, भारत

*CORRESPONDENCE
Address Lalima Bathem, Research Scholar, Department of Yogic Science and Human Consciousness, Dev Sanskriti VIshwavidyalaya, Gayatrikunj, Haridwar
Email
lalima.batham@dsvv.ac.in

PUBLISHED BY
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya Gayatrikunj-Shantikunj Haridwar, India

OPEN ACCESS
Copyright (c) 2024 Batham and Singh.
Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

सारांश: अश्वमेध यज्ञ भारतीय परंपरा में यज्ञों का राजा कहा गया है। वैदिक काल से यज्ञ अनुष्ठानों में अश्वमेध का विशिष्ट स्थान है। अश्व शक्ति का प्रतीक है। शतपथ ब्राह्मण में राष्ट्र, इंद्रा, सूर्य आदि शक्तिशाली अस्तित्व को अश्व के रूप में निरूपित किया गया है। मेध शब्द यज्ञ का पर्यायवाची शब्द है। निघण्टु ग्रन्थ में यज्ञ के 15 सम्बोधन दिए गए है, उनमें से एक शब्द 'मेध' है। अश्वमेध के व्यापक अर्थ में, वैदिक अलंकारों में मेध का अर्थ मेधा अर्थात बुद्धि का संबर्धन अर्थात प्रज्ञा का जागरण होता है। अश्वमेध का तात्विक अर्थ शास्त्रीय सन्दर्भों में अध्ययन करना, इस अमूल्य धरोहर को समझने में जरुरी है। इस शोध पत्र में अश्वमेध को वैदिक साहित्य के सन्दर्भ में विशेष कर वेद में दिए गए मन्त्रों के अर्थ द्वारा समझने का प्रयास किया गया है। ऋग्वेद 5/27/4 में अश्वमेध ऋत अथवा परम सत्य, ऋग्वेद 5/27/5 में अश्वमेध से सेचन शक्ति प्रवाह एवं सोम तत्त्व रुपी आनंद, तथा ऋग्वेद 8/68/15 एवं ऋग्वेद 8/68/16 में अश्वमेध से बल एवं प्राण प्रवाह की प्राप्ति कही गई है। अश्वमेध से हमारी बुद्धि का सम्वर्धन होता है अर्थात प्रज्ञा का जागरण होता है, जिससे मनुष्य परमात्मा में ही प्रतिष्ठित हो। वेद हमें कहते है कि अश्वमेध द्वारा जनमानस का परिष्कार – प्रज्ञा का जागरण अश्वमेध का प्रतिफल है और वह ईश्वरीय शक्ति प्रवाह (अश्व) का यजन (मेध) ही अश्वमेघ का व्यापक, विराट उद्देश्य है।

कूट शब्द: वेद, अश्वमेध, यज्ञ, अश्व, मेध, प्रज्ञा

प्रस्तावना

अश्वमेध को भारतीय परंपरा में यज्ञों का राजा कहा गया है। वैदिक काल से यज्ञ अनुष्ठानों में अश्वमेध का विशिष्ठ स्थान है।

अश्वमेध में अश्व का अर्थ अलंकारिक है। अश्व शक्ति का प्रतीक है, और वैदिक साहित्य में जहाँ पर भी शक्ति के अलंकारों की आवश्यकता पड़ी है वहाँ उसे अश्व के रूप में वर्णित किया गया है। जैसे कि शतपथ ब्राह्मण में राष्ट्र, इंद्रा, सूर्य आदि शक्तिशाली अस्तित्व को अश्व के रूप में निरूपित किया गया है [1, 2]। बृहदारण्यक उपनिषद् में ईश्वरीय शक्ति को ही अश्व के रूप में वर्णित किया गया है। बृहदारण्यक उपनिषद् के प्रथम ब्राह्मण के दो श्लोक अश्वमेध यज्ञ के विषय में है, जिसमें सृष्टि रुपी यज्ञ को एक विराट अश्व की उपमा से व्यक्त किया गया है [3]।

"इस यज्ञीय अश्व (विश्वव्यापी शक्ति प्रवाह) का सिर ऊषा–काल है। आदित्य ही नेत्र हैं, वायु ही प्राण है, वैश्वानराग्नि खुला हुआ मुख है और संवत्सर ही आत्मा है। द्युलोक उस यज्ञाश्व (यज्ञीय अश्व) का पृष्ठ (ऊपरी या अव्यक्त) भाग, अन्तरिक्ष उसका उदर, पृथिवी पैर रखने का स्थल, दिशाएँ पार्श्व भाग, अवान्तर दिशाएँ – पसलियाँ, ऋतुएँ अन्य अङ्ग, मास और पक्ष–सन्धिस्थल, दिन और रात्रि दोनों पैर, नक्षत्र समूह – अस्थियाँ और आकाश उसका मांस है। अपरिपक्व (उदर स्थित) अन्न–सिकता (वस्तु या सूक्ष्मकण) है, नदियाँ–नाड़ी समूह, पर्वत समूह–यकृत् और हृदयगत मांस है। वनस्पतियाँ–रोम (लोम समूह), ऊर्ध्वगामी सूर्य–नाभि से ऊपर का स्थल, अधोगामी (अस्ताचल को जाता हुआ) सूर्य–कमर से नीचे का भाग है। विद्युत् चमकना मानों इस यज्ञाश्व का जम्हाई लेना है, मेघों का गरजना उसका अँगड़ाई लेना है, जल वर्षा ही मानों उसका मूत्र त्यागना है और शब्द घोष उसकी (अश्व) वाणी है ॥ शतपथ ब्राह्मण / प्रथम ब्राह्मण श्लोक १॥". इस ब्राह्मण के भाष्य में जो विशेष टिपण्णी दी गई है उसके अनुसार, "प्रथम ब्राह्मण में विराट 'मेध्य अश्व' का वर्णन किया गया है। 'अश्व' शब्द शक्ति एवं गति का परिचायक है। यह ब्रह्माण्ड गतिशील है। इसे जो शक्ति गतिशील किये है, उसे 'अश्व' कहा गया है। अशु–व्याप्नोति के अनुसार तीव्रगति से संचारित होने वाले को 'अश्व' कहना उचित है।... यह शक्ति का संचार जो विश्व का संवाहक है, निश्चित रूप से 'मेध्य' (यजनीय) है।... ", [3].

अश्व और मेध दो शब्दों में, मेध शब्द यज्ञ का पर्यायवाची शब्द है। निघण्टु ग्रन्थ में यज्ञ के 15 सम्बोधन दिए गए है, उनमें से एक शब्द 'मेध' है [4]। साथ ही व्याकरण के अनुसार, मेध शब्द के तीन अर्थ है – "मेधृ–मेधा, हिंसनयो: संगमे च", अर्थात १) मेधा – बुद्धि का सम्वर्धन, २) हिंसा, ३) संगतिकरण [4, 5]। यज्ञ में हिंसा का कोई स्थान नहीं है (2), और मेध का अर्थ, अश्वमेध के सन्दर्भ में यज्ञ (संगतिकरण) ही है। साथ ही अश्वमेध के व्यापक अर्थ में, वैदिक अलंकारों में मेध का अर्थ मेधा अर्थात बुद्धि का सम्वर्धन अर्थात प्रज्ञा का जागरण होता है [6]।

अश्वमेध का तात्विक अर्थ शास्त्रीय सन्दर्भों में अध्ययन करना, इस अमूल्य धरोहर को समझने में जरुरी है। इस शोध पत्र में अश्वमेध को वैदिक साहित्य के सन्दर्भ में विशेष कर वेद में दिए गए मन्त्रों के अर्थ द्वारा समझने का प्रयास किया गया है।

वेद मन्त्रों में निहित 'अश्व' शब्द

तालिका 1 में चयनित 6 वेद मंत्र दिए गए है। जिसमें ऋग्वेद 1/164/34–35 में यज्ञ को विश्व की नाभि कहा गया है और साथ ही अश्व (विश्व प्रवाह) की शक्ति का रहस्य सोम (प्रसन्नता और अमरता के देवता [7]) बताया गया है। ऋग्वेद 2/35/6 में अश्व की प्राप्ति हेतु परिपक्व बुद्धि एवं सत्य आचरण की बात कही गई है। ऋग्वेद 4/39/3 में पाप से मुक्ति हेतु उषा के प्रकट होने पर तथा अग्नि के प्रदीप्त होने पर (यज्ञ कर्म) से दधिक्रादेव से प्रार्थना की गई है और दधिक्रादेव को अश्वरूप कहा गया है। साथ ही ऋग्वेद 8/61/6 एवं अथर्ववेद 20/118/2 में इंद्रदेव से अश्व की पुरुषार्थ एवं शक्ति प्रवाहों हेतु प्रार्थना की गई है [8, 9]।

वेद मन्त्रों में निहित 'अश्वमेध' शब्द

वेदों में चयनित अश्व के संदर्भो के अवलोकन के बाद तालिका 2 में चयनित 7 वेद मंत्र दिए गए है। जिसमे ऋग्वेद 5/27/4 में प्रार्थना की गई है कि अश्वमेध को समर्पित भाव से यज्ञ करने वाले व्यक्ति को अग्निदेव दिव्या सम्पदा और मेधा प्रदान करें जिससे वह ऋत अथवा परम सत्य पा सकें। इसी के अगले मंत्र में ऋग्वेद 5/27/5 में बताया गया है अश्वमेध से प्राप्त सेचन प्रवाह सोम तत्त्व की भांति हमें आनंदित करें, जिसमें अश्वमेध यज्ञ करने का प्रतिफल भी व्यक्त होता है। इसी के अगले ऋग्वेद 5/27/6 मंत्र में अश्वमेध के द्वारा सैकड़ों प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान होते हैं, यह सत्य भी उद्घाटित होता है, जिसमें इंद्रदेव से अश्वमेध को सूर्य के समान विशालता एवं अजरता प्रदान करने हेतु प्रार्थना की गई है।

ऋग्वेद 8/68/15 एवं ऋग्वेद 8/68/16 में अश्वमेध से बल एवं प्राण प्रवाह प्राप्त होने का सत्य परिलक्षित होता है। यजुर्वेद 18/22 में अश्वमेध यज्ञ का वर्णन अन्य मूलभूत तत्त्व एवं अथर्ववेद 11/9/7 में अश्वमेध यज्ञ का वर्णन अन्य यज्ञ (जैसे की राजसूय, वाजपेय, अग्निष्टोम इत्यादि) के साथ उसकी महत्ता एवं वैदिक कालीन प्रतिस्थापना का सूचक है। अथर्ववेद 11/9/7 में अश्वमेध यज्ञ को परमात्मा में ही (उच्छिष्ट – त्रिगुणातीत परमात्मा द्वारा छोड़ा गया वह अंश जिससे त्रिगुणमयी सृष्टि बनी) प्रतिष्ठित होने का प्रमाण मिलता है , जिससे अश्वमेध की अनुपम महिमा ही प्रमाणित होती है।

doi.org/10.36018/dsiij.23.338

मंत्र	भावार्थ [8, 9]
पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः। पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य रेतः पृच्छामि वाचः परमं व्योम॥ (ऋग्वेद 1/164/34)	"इस धरती का अंतिम छोर कौन सा है? सभी भुवनों का केंद्र कहां है? अश्व की शक्ति कहां है? और वाणी का उद्गम कहां है? यह हम आपसे पूछते हैं।"
इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्या अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः। अयं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम॥ (ऋग्वेद 1/164/35)	"(यज्ञ की) यह वेदिका पृथ्वी का अंतिम छोर है, यह यज्ञ ही संसार चक्र की धुरी है। यह सोम ही अश्व (बलशाली) की शक्ति (वीर्य) है। यह 'ब्रह्मा' ही वाणी का उत्पत्ति स्थान है।"
अश्वस्यात्र जनिमास्य च स्वर्द्रुहो रिषः संपृचः पाहि सूरीन्। आमासु पूर्षु परो अप्रमृष्यं नारातयो वि नशन्ननृतानि॥ (ऋग्वेद 2/35/6)	"इन अपान्नपात् देव के द्वारा ही अश्व का जन्म होता है। यह अश्व उत्तम सुखदायी है। हे अपान्नपात् देव! आप हिंसकों तथा द्रोहियों से स्तोताओं की रक्षा करें। अपरिपक्व बुद्धि वाले असत्याचरण वाले तथा अदानी व्यक्ति अहिंसनीय अपान्नपात् देव को नहीं प्राप्त कर सकते।"
यो अश्वस्य दधिक्राव्णो अकारीत्समिद्धे अग्ना उषसो व्युष्टौ। अनागसं तमदितिः कृणोतु स मित्रेण वरुणेना सजोषाः॥ (ऋग्वेद 4/39/3)	"जो मनुष्य उषा के प्रकट होने पर तथा अग्नि के प्रदीप्त होने पर अश्वरूप दधिक्रादेव की प्रार्थना करते हैं। ऐसे मनुष्य को मित्र, वरुण तथा अदिति के साथ दधिक्रादेव पाप रहित करें।"
पौरो अश्वस्य पुरुकृद्गवामस्युत्सो देव हिरण्ययः । नकिर्हि दानं परिमर्धिषत्त्वे यद्यद्यामि तदा भर॥ (ऋग्वेद 8/61/6 एवं अथर्ववेद 20/118/2)	"हे इंद्रदेव आप गौओं (गायों, इंद्रियों, पोषक – प्रवाहों) तथा अश्वों (घोड़ों, पुरुषार्थ एवं शक्ति प्रवाहों) को बढ़ाने वाले हैं। आप स्वर्ण (संपदा) के स्रोत हैं।आपके अनुदानों को विस्मृत करने की सामर्थ्य किसी में नहीं, अतः हमें अभीष्ट फलों से परिपूर्ण करें।"

तालिका 1: 'अश्व' शब्द से युक्त चयनित वेद मंत्र

मंत्र	भावार्थ [8--10]
यो म इति प्रवोचत्यश्वमेधाय सूरये। दद्दृचा सनिं यते दद्न्मेधामृतायते॥ (ऋग्वेद 5/27/4)	"हे अग्नि–परमेश्वर! जब कोई विद्वान पुरुष 'अश्वमेध' को लक्ष्य करके कहता है 'यह मेरा है', तब आप उस यत्नशील को ऋत (सत्य अथवा यज्ञ) के लिए ऋचारूप में दिव्य संपदा एवं श्रेष्ठ मेधा प्रदान करते हैं।"
यस्य मा परुषाः शतमुद्धर्षयन्त्युक्षणः। अश्वमेधस्य दानाः सोमाइव त्र्याशिरः॥ (ऋग्वेद 5/27/5)	"जिस अश्वमेध से प्राप्त सौ (सैकड़ो) उक्षण (वृषभ या सेचन प्रवाह) हमें हर्षित करते हैं, उस अश्वमेध (दिव्य मेधा प्रवाह या राष्ट्र) के दान त्रयाशिर (तीन को मिलाकर एकाकार किये गए) सोम (पोषक तत्व) की भांति हमें आनंदित करें।"
इन्द्राग्नी शतदाव्न्यश्वमेधे सुवीर्यम्। क्षत्रं धारयतं बृहद्दिवि सूर्यमिवाजरम्॥ (ऋग्वेद 5/27/6)	"हे इंद्राग्ने! सैकड़ों प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करने वाले अश्वमेध को आप श्रेष्ठ पौरुष एवं क्षात्रबल के साथ सूर्य के समान विशालता एवं अजरता प्रदान करें।"
ऋज्राविन्द्रोत आ ददे हरी ऋक्षस्य सूनवि । आश्वमेधस्य रोहिता॥ (ऋग्वेद 8/68/15)	"(अतिथिग्व पुत्र) इंद्रोत से ऋजु (सरल प्रकृति वाले) ऋक्ष पुत्र से प्रेरक तथा अश्वमेध के पुत्र से रोहित (लाल अथवा आरोहणशील) अश्व अथवा बल प्राप्त प्रवाह प्राप्त हुए।"
सुरथाँ आतिथिग्वे स्वभीशूँरार्क्षे। आश्वमेधे सुपेशसः॥ (ऋग्वेद 8/68/16)	"अतिथिग्व के पुत्र से श्रेष्ठ रथ युक्त ऋक्ष पुत्र से लगाम (नियंत्रण तंत्र) युक्त तथा अश्वमेध के पुत्र से सुंदर स्वरूप वाले (अश्व या प्राण प्रवाह) प्राप्त हुए।"
अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ (यजुर्वेद 18/22)	"यज्ञ के फल से हमारे लिए अग्नि, प्रवर्ग्य, पुरोडाशा संबंधीयाग, सूर्य, प्राण, यज्ञ, अश्वमेध, भूमि दिति और अदिति, द्युलोक, विराट पुरुष के अवयव, शक्तियां और दिशाएँ आदि सब सहायक होकर हमें अभीष्ट प्राप्त कराएं।"
राजसूयं वाजपेयमग्निष्टोमस्तदध्वरः। अर्काश्वमेधावुच्छिष्टे जीवबर्हिर्मदिन्तमः॥ (अथर्ववेद 11/9/7)	राजसूय, वाजपेय, अग्निष्टोम, अध्वर, अर्क, अश्वमेध और अनानंदप्रद जीवन रक्षक यज्ञ, ये सभी प्रकार के यज्ञ उच्छिष्ट में ही विद्यमान हैं।

तालिका 2: 'अश्वमेध' शब्द से युक्त चयनित वेद मंत्र

उपसंहार

वेद मन्त्रों में अश्वमेध एवं अश्व का अर्थ एवं महत्व स्पष्ट रूप से दिया गया है। अश्व – ईश्वरीय शक्ति प्रवाह है और मेध उस प्रवाह का यजन–पूजन है। वेद भारतीय संस्कृति का मूल है एवं मूल स्त्रोत है। वेद में ही इसका व्यापक एवं गहरा अर्थ परिलक्षित हो रहा है। साथ ही यह भी सत्य निकलकर आता है कि अश्वमेध का अस्तित्व वेद के रचना काल में भी रहा है।

अश्वमेध ऐश्वर्य के रूप में हमें ऋत अथवा परम सत्य (ऋग्वेद 5/27/4) की प्राप्ति करता है (ऋग्वेद 5/27/4) एवं सोम तत्त्व की भांति हमें आनंदित करता है (ऋग्वेद 5/27/5)। अश्वमेध हमें परिपक्व बुद्धि एवं सत्य आचरण (ऋग्वेद 2/35/6) द्वारा बल एवं प्राण प्रवाह (ऋग्वेद 8/68/15–16) प्राप्त करने हेतु प्रेरित करता है। अश्वमेध से हमारी बुद्धि का संबर्धन होता है (ऋग्वेद 5/27/4) अर्थात प्रज्ञा का जागरण होता है, जिससे मनुष्य परमात्मामें (अथर्ववेद 11/9/7) ही प्रतिष्ठित हों। अस्तु, वेद हमें कहते है कि अश्व–मेध द्वारा जनमानस का परिष्कार – प्रज्ञा का जागरण अश्वमेध का प्रतिफल है और वह ईश्वरीय शक्ति प्रवाह (अश्व) का यजन (मेध) ही अश्वमेघ का व्यापक, विराट उद्देश्य है।

Compliance with ethical standards Not required.
Conflict of interest The authors declare that they have no conflict of interest.

सन्दर्भ

[1] माता भगवती देवी शर्मा (संपादक)। अश्वमेध के सम्ब–न्ध में शतपथ ब्राह्मण का मत। अखंड ज्योति पत्रिका, 1992;55:11(50)।

[2] माता भगवती देवी शर्मा (संपादक)। यज्ञो का राजा अश्वमेध – अश्व की अवधारणा। अखंड ज्योति पत्रिका, 1992;55:11(19)।

[3] वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य (संपादक), 108 उपनिषद् ज्ञान खंड – बृहदारण्यक उपनिषद्। सं–स्करण, युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, 2005।

[4] माता भगवती देवी शर्मा (संपादक)। वैदिक हिंसा, हिंसा न भवति, अर्थ निकालें, अनर्थ नहीं। अखंड ज्योति पत्रिका, 1992;55:11(56)।

[5] माता भगवती देवी शर्मा (संपादक)। 'मेध' सम्ब–न्धी भ्रांतियों का निराकरण। अखंड ज्योति पत्रिका, 1992;55:11(53)।

[6] माता भगवती देवी शर्मा (संपादक)। मेधा को जो जगाये, वह है – अश्वमेध। अखंड ज्योति पत्रिका, 1992;55:11(61)।

[7] श्री अरविन्द। वेद रहस्य। पुनःसंस्करण, श्री अरविन्द आश्रम, पांडिचेरी, 2015।

[8] वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य एवं माता भगवती देवी शर्मा (संपादक)। ऋग्वेद । पुनःसंस्करण, युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, 2011।

[9] वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य एवं माता भगवती देवी शर्मा (संपादक)। अथर्ववेद । पुनःसंस्करण, युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, 2011।

[10] वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य एवं माता भगवती देवी शर्मा (संपादक)। यजुर्वेद । पुनःसंस्करण, युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, 2011।